॥ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रं ॥
अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमाला मंत्रस्य ।
वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीललितापरमेश्वरी देवता ।
श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजं । मध्यकूटेति शक्तिः । शक्तिकूटेति कीलकं ।
श्रीललितामहात्रिपुरसुंदरी प्रसादसिद्धिद्वारा चिंतितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।
॥ ध्यानं ॥
सिंदूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि स्फुरत्
तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहां ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत् परामंबिकां ॥

अरुणां करुणा तरंगिताक्षीं
धृत पाशांकुश पुष्प बाणचापां ।
अणिमादिभि रावृतां मयूखै
रहमित्येव विभावये भवानीं ॥

ध्यायेत् पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं
हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वरांगीं ।
सर्वालंकार युक्तां सतत मभयदां भक्तनम्रां भवानीं
श्रीविद्यां शांत मूर्तिं सकल सुरनुतां सर्व संपत्प्रदात्रीं ॥

सकुंकुम विलेपनामलिकचुंबि कस्तूरिकां
समंद हसितेक्षणां सशर चाप पाशांकुशां ।
अशेषजन मोहिनीं अरुण माल्य भूषांबरां
जपाकुसुम भासुरां जपविधौ स्मरे दंबिकां ॥

ॐ श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत् सिंहासनेश्वरी ।
चिदग्नि कुंड संभूता देवकार्य समुद्यता ॥ 1॥
उद्यद्भानु सहस्राभा चतुर्बाहु समन्विता ।
रागस्वरूप पाशाढ्या क्रोधाकारांकुशोज्ज्वला ॥ 2॥
मनोरूपेक्षु कोदंडा पंचतन्मात्र सायका ।
निजारुण प्रभापूर मज्जद्ब्रह्मांड मंडला ॥ 3॥
चंपकाशोक पुन्नाग सौगंधिक लसत्कचा ।
कुरुविंदमणि श्रेणी कनत्कोटीर मंडिता ॥ 4॥
अष्टमीचंद्र विभ्राज दलिकस्थल शोभिता ।
मुखचंद्र कलंकाभ मृगनाभि विशेषका ॥ 5॥
वदनस्मर मांगल्य गृहतोरण चिल्लिका ।
वक्त्रलक्ष्मी परीवाह चलन्मीनाभ लोचना ॥ 6॥
नवचंपक पुष्पाभ नासादंड विराजिता ।
ताराकांति तिरस्कारि नासाभरण भासुरा ॥ 7॥
कदंबमंजरी क्लृप्त कर्णपूर मनोहरा ।
ताटंक युगली भूत तपनोडुप मंडला ॥ 8॥
पद्मराग शिलादर्श परिभावि कपोलभूः ।
नवविद्रुम बिंबश्री न्यक्कारि रदनच्छदा ॥ 9॥
शुद्ध विद्यांकुराकार द्विजपंक्ति द्वयोज्ज्वला ।
कर्पूर वीटिकामोद समाकर्षि दिगंतरा ॥ 10॥
निज सल्लाप माधुर्य विनिर्भर्त्सित कच्छपी ।
मंदस्मित प्रभापूर मज्जत्कामेश मानसा ॥ 11॥
अनाकलित सादृश्य चुबुकश्री विराजिता ।
कामेश बद्ध मांगल्य सूत्र शोभित कंधरा ॥ 12॥
कनकांगद केयूर कमनीय भुजान्विता ।
रत्नग्रैवेय चिंताक लोल मुक्ता फलान्विता ॥ 13॥
कामेश्वर प्रेमरत्न मणि प्रतिपण स्तनी ।

नाभ्यालवाल रोमालि लता फल कुचद्वयी ॥ 14॥
लक्ष्यरोम लताधारता समुन्नेय मध्यमा ।
स्तनभार दलन्मध्य पट्टबंध वलित्रया ॥ 15॥
अरुणारुण कौसुंभ वस्त्र भास्वत् कटीतटी ।
रत्न किंकिणिका रम्य रशना दाम भूषिता ॥ 16॥
कामेश ज्ञात सौभाग्य मार्दवोरु द्वयान्विता ।
माणिक्य मुकुटाकार जानुद्वय विराजिता ॥ 17॥
इंद्रगोप परिक्षिप्त स्मरतूणाभ जंघिका ।
गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ जयिष्णु प्रपदान्विता ॥ 18॥
नख दीधिति संछन्न नमज्जन तमोगुणा ।
पदद्वय प्रभाजाल पराकृत सरोरुहा ॥ 19॥
शिंजान मणिमंजीर मंडित श्री पदांबुजा ।
मराली मंदगमना महालावण्य शेवधिः ॥ 20॥
सर्वारुणाऽनवद्यांगी सर्वाभरण भूषिता ।
शिव कामेश्वरांकस्था शिवा स्वाधीन वल्लभा ॥ 21॥
सुमेरु मध्य शृंगस्था श्रीमन्नगर नायिका ।
चिंतामणि गृहांतस्था पंच ब्रह्मासन स्थिता ॥ 22॥
महापद्माटवी संस्था कदंबवन वासिनी ।
सुधासागर मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥ 23॥
देवर्षि गण संघात स्तूयमानात्म वैभवा ।
भंडासुर वधोद्युक्त शक्तिसेना समन्विता ॥ 24॥
संपत्करी समारूढ सिंधुर व्रज सेविता ।
अश्वारूढाधिष्ठिताश्व कोटि कोटिभिरावृता ॥ 25॥
चक्रराज रथारूढ सर्वायुध परिष्कृता ।
गेयचक्र रथारूढ मंत्रिणी परिसेविता ॥ 26॥
किरिचक्र रथारूढ दंडनाथा पुरस्कृता ।
ज्वाला मालिनिकाक्षिप्त वह्निप्राकार मध्यगा ॥ 27॥

भंडसैन्य वधोद्युक्त शक्ति विक्रम हर्षिता ।
नित्या पराक्रमाटोप निरीक्षण समुत्सुका ॥ 28॥
भंडपुत्र वधोद्युक्त बाला विक्रम नंदिता ।
मंत्रिण्यंबा विरचित विषंग वध तोषिता ॥ 29॥
विशुक्र प्राणहरण वाराही वीर्य नंदिता ।
कामेश्वर मुखालोक कल्पित श्रीगणेश्वरा ॥ 30॥
महागणेश निर्भिन्न विघ्नयंत्र प्रहर्षिता ।
भंडासुरेंद्र निर्मुक्त शस्त्र प्रत्यस्त्र वर्षिणी ॥ 31॥
करांगुलि नखोत्पन्न नारायण दशाकृतिः ।
महा पाशुपतास्त्राग्नि निर्दग्धासुर सैनिका ॥ 32॥
कामेश्वरास्त्र निर्दग्ध सभंडासुर शून्यका ।
ब्रह्मोपेंद्र महेंद्रादि देव संस्तुत वैभवा ॥ 33॥
हर नेत्राग्नि संदग्ध काम संजीवनौषधिः ।
श्रीमद्वाग्भव कूटैक स्वरूप मुख पंकजा ॥ 34॥
कंठाधः कटि पर्यंत मध्यकूट स्वरूपिणी ।
शक्ति कूटैकतापन्न कट्यधोभाग धारिणी ॥ 35॥
मूल मंत्रात्मिका मूलकूटत्रय कलेबरा ।
कुलामृतैक रसिका कुलसंकेत पालिनी ॥ 36॥
कुलांगना कुलांतस्था कौलिनी कुलयोगिनी ।
अकुला समयांतस्था समयाचार तत्परा ॥ 37॥
मूलाधारैक निलया ब्रह्मग्रंथि विभेदिनी ।
मणि पूरांतरुदिता विष्णुग्रंथि विभेदिनी ॥ 38॥
आज्ञा चक्रांतरालस्था रुद्रग्रंथि विभेदिनी ।
सहस्रारांबुजारूढा सुधा साराभिवर्षिणी ॥ 39॥
तडिल्लता समरुचिः षट्चक्रोपरि संस्थिता ।
महासक्तिः कुंडलिनी बिसतंतु तनीयसी ॥ 40॥
भवानी भावनागम्या भवारण्य कुठारिका ।

भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त सौभाग्यदायिनी ॥ 41॥
भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।
शांभवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥ 42॥
शांकरी श्रीकरी साध्वी शरच्चंद्र निभानना ।
शातोदरी शांतिमती निराधारा निरंजना ॥ 43॥
निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला ।
निर्गुणा निष्कला शांता निष्कामा निरुपप्लवा ॥ 44॥
नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपंचा निराश्रया ।
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरंतरा ॥ 45॥
निष्कारणा निष्कलंका निरुपाधिर् निरीश्वरा ।
नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥ 46॥
निश्चिंता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी ।
निर्ममा ममताहंत्री निष्पापा पापनाशिनी ॥ 47॥
निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी ।
निस्संशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ॥ 48॥
निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी ।
निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥ 49॥
निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया ।
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहंत्री सुखप्रदा ॥ 50॥
दुष्टदूरा दुराचार शमनी दोषवर्जिता ।
सर्वज्ञा सांद्रकरुणा समानाधिक वर्जिता ॥ 51॥
सर्वशक्तिमयी सर्व मंगला सद्गतिप्रदा ।
सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमंत्र स्वरूपिणी ॥ 52॥
सर्व यंत्रात्मिका सर्व तंत्ररूपा मनोन्मनी ।
माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ॥ 53॥
महारूपा महापूज्या महापातक नाशिनी ।
महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ॥ 54॥

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला ।
महाबुद्धिर् महासिद्धिर् महायोगेश्वरेश्वरी ॥ 55॥
महातंत्रा महामंत्रा महायंत्रा महासना ।
महायाग क्रमाराध्या महाभैरव पूजिता ॥ 56॥
महेश्वर महाकल्प महातांडव साक्षिणी ।
महाकामेश महिषी महात्रिपुर सुंदरी ॥ 57॥
चतुःषष्ट्युपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी ।
महाचतुः षष्टिकोटि योगिनी गणसेविता ॥ 58॥
मनुविद्या चंद्रविद्या चंद्रमंडल मध्यगा ।
चारुरूपा चारुहासा चारुचंद्र कलाधरा ॥ 59॥
चराचर जगन्नाथा चक्रराज निकेतना ।
पार्वती पद्मनयना पद्मराग समप्रभा ॥ 60॥
पंच प्रेतासनासीना पंचब्रह्म स्वरूपिणी ।
चिन्मयी परमानंदा विज्ञान घनरूपिणी ॥ 61॥
ध्यान ध्यातृ ध्येयरूपा धर्माधर्म विवर्जिता ।
विश्वरूपा जागरिणी स्वपंती तैजसात्मिका ॥ 62॥
सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था विवर्जिता ।
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविंदरूपिणी ॥ 63॥
संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधान करीश्वरी ।
सदाशिवाऽनुग्रहदा पंचकृत्य परायणा ॥ 64॥
भानुमंडल मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।
पद्मासना भगवती पद्मनाभ सहोदरी ॥ 65॥
उन्मेष निमिषोत्पन्न विपन्न भुवनावली ।
सहस्र शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥ 66॥
आब्रह्म कीट जननी वर्णाश्रम विधायिनी ।
निजाज्ञारूप निगमा पुण्यापुण्य फलप्रदा ॥ 67॥
श्रुति सीमंत सिंदूरी कृत पादाब्ज धूलिका ।

सकलागम संदोह शुक्ति संपुट मौक्तिका ॥ 68॥
पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी ।
अंबिकाऽनादि निधना हरिब्रह्मेंद्र सेविता ॥ 69॥
नारायणी नादरूपा नामरूप विवर्जिता ।
ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय वर्जिता ॥ 70॥
राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना ।
रंजनी रमणी रस्या रणत्किंकिणि मेखला ॥ 71॥
रमा राकेंदुवदना रतिरूपा रतिप्रिया ।
रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलंपटा ॥ 72॥
काम्या कामकलारूपा कदंब कुसुम प्रिया ।
कल्याणी जगतीकंदा करुणा रस सागरा ॥ 73॥
कलावती कलालापा कांता कादंबरीप्रिया ।
वरदा वामनयना वारुणी मद विह्वला ॥ 74॥
विश्वाधिका वेदवेद्या विंध्याचल निवासिनी ।
विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥ 75॥
क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र क्षेत्रज्ञ पालिनी ।
क्षयवृद्धि विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल समर्चिता ॥ 76॥
विजया विमला वंद्या वंदारु जन वत्सला ।
वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमंडल वासिनी ॥ 77॥
भक्तिमत् कल्पलतिका पशुपाश विमोचिनी ।
संहृताशेष पाषंडा सदाचार प्रवर्तिका ॥ 78॥
तापत्रयाग्नि संतप्त समाह्लादन चंद्रिका ।
तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥ 79॥
चितिस्तत्पद लक्ष्यार्था चिदेकरस रूपिणी ।
स्वात्मानंद लवीभूत ब्रह्माद्यानंद संततिः ॥ 80॥
परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यंती परदेवता ।
मध्यमा वैखरीरूपा भक्त मानस हंसिका ॥ 81॥

कामेश्वर प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता ।
शृंगार रस संपूर्णा जया जालंधर स्थिता ॥ 82॥
ओड्याणपीठ निलया बिंदु मंडलवासिनी ।
रहोयाग क्रमाराध्या रहस्तर्पण तर्पिता ॥ 83॥
सद्यःप्रसादिनी विश्व साक्षिणी साक्षिवर्जिता ।
षडंगदेवता युक्ता षाड्गुण्य परिपूरिता ॥ 84॥
नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण सुख दायिनी ।
नित्या षोडशिका रूपा श्रीकंठार्ध शरीरिणी ॥ 85॥
प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी ।
मूलप्रकृतिर् अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त स्वरूपिणी ॥ 86॥
व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या स्वरूपिणी ।
महाकामेश नयन कुमुदाह्लाद कौमुदी ॥ 87॥
भक्त हार्द तमोभेद भानुमद्भानु संततिः ।
शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवंकरी ॥ 88॥
शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ॥ 89॥
चिच्छक्तिश् चेतनारूपा जडशक्तिर् जडात्मिका ।
गायत्री व्याहृतिः संध्या द्विजबृंद निषेविता ॥ 90॥
तत्त्वासना तत्त्वमयी पंच कोशांतर स्थिता ।
निस्सीम महिमा नित्य यौवना मदशालिनी ॥ 91॥
मदघूर्णित रक्ताक्षी मदपाटल गंडभूः ।
चंदन द्रव दिग्धांगी चांपेय कुसुम प्रिया ॥ 92॥
कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कुलकुंडालया कौल मार्ग तत्पर सेविता ॥ 93॥
कुमार गणनाथांबा तुष्टिः पुष्टिर् मतिर् धृतिः ।
शांतिः स्वस्तिमती कांतिर् नंदिनी विघ्ननाशिनी ॥ 94॥
तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी कामरूपिणी ।

मालिनी हंसिनी माता मलयाचल वासिनी ॥ 95॥
सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका ।
कालकंठी कांतिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥ 96॥
वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था विवर्जिता ।
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥ 97॥
विशुद्धिचक्र निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना ।
खट्वांगादि प्रहरणा वदनैक समन्विता ॥ 98॥
पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक भयंकरी ।
अमृतादि महाशक्ति संवृता डाकिनीश्वरी ॥ 99॥
अनाहताब्ज निलया श्यामाभा वदनद्वया ।
दंष्ट्रोज्ज्वलाऽक्ष मालादि धरा रुधिरसंस्थिता ॥ 100॥
कालरात्र्यादि शक्त्यौघ वृता स्निग्धौदनप्रिया ।
महावीरेंद्र वरदा राकिण्यंबा स्वरूपिणी ॥ 101॥
मणिपूराब्ज निलया वदनत्रय संयुता ।
वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥ 102॥
रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न प्रीत मानसा ।
समस्तभक्त सुखदा लाकिन्यंबा स्वरूपिणी ॥ 103॥
स्वाधिष्ठानांबुज गता चतुर्वक्त्र मनोहरा ।
शूलाद्यायुध संपन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ॥ 104॥
मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बंधिन्यादि समन्विता ।
दध्यन्नासक्त हृदया काकिनी रूप धारिणी ॥ 105॥
मूलाधारांबुजारूढा पंच वक्त्राऽस्थि संस्थिता ।
अंकुशादि प्रहरणा वरदादि निषेविता ॥ 106॥
मुद्गौदनासक्त चित्ता साकिन्यंबा स्वरूपिणी ।
आज्ञा चक्राब्ज निलया शुक्लवर्णा षडानना ॥ 107॥
मज्जासंस्था हंसवती मुख्य शक्ति समन्विता ।
हरिद्रान्नैक रसिका हाकिनी रूप धारिणी ॥ 108॥

सहस्रदल पद्मस्था सर्व वर्णोप शोभिता ।
सर्वायुधधरा शुक्ल संस्थिता सर्वतोमुखी ॥ 109॥
सर्वौदन प्रीतचित्ता याकिन्यंबा स्वरूपिणी ।
स्वाहा स्वधाऽमतिर् मेधा श्रुतिः स्मृतिर् अनुत्तमा ॥ 110॥
पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण कीर्तना ।
पुलोमजार्चिता बंध मोचनी बर्बरालका ॥ 111॥
विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि जगत्प्रसूः ।
सर्वव्याधि प्रशमनी सर्वमृत्यु निवारिणी ॥ 112॥
अग्रगण्याऽचिंत्यरूपा कलिकल्मष नाशिनी ।
कात्यायनी कालहंत्री कमलाक्ष निषेविता ॥ 113॥
तांबूल पूरित मुखी दाडिमी कुसुम प्रभा ।
मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ॥ 114॥
नित्यतृप्ता भक्तनिधिर् नियंत्री निखिलेश्वरी ।
मैत्र्यादि वासनालभ्या महाप्रलय साक्षिणी ॥ 115॥
परा शक्तिः परा निष्ठा प्रज्ञानघन रूपिणी ।
माध्वीपानालसा मत्ता मातृका वर्ण रूपिणी ॥ 116॥
महाकैलास निलया मृणाल मृदु दोर्लता ।
महनीया दयामूर्तिर् महासाम्राज्य शालिनी ॥ 117॥
आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता ।
श्री षोडशाक्षरी विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥ 118॥
कटाक्ष किंकरी भूत कमला कोटि सेविता ।
शिरःस्थिता चंद्रनिभा भालस्थेंद्र धनुःप्रभा ॥ 119॥
हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणांतर दीपिका ।
दाक्षायणी दैत्यहंत्री दक्षयज्ञ विनाशिनी ॥ 120॥
दरांदोलित दीर्घाक्षी दर हासोज्ज्वलन् मुखी ।
गुरुमूर्तिर् गुणनिधिर् गोमाता गुहजन्मभूः ॥ 121॥
देवेशी दंडनीतिस्था दहराकाश रूपिणी ।

प्रतिपन्मुख्य राकांत तिथि मंडल पूजिता ॥ 122॥
कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप विनोदिनी ।
सचामर रमा वाणी सव्य दक्षिण सेविता ॥ 123॥
आदिशक्तिर् अमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः ।
अनेककोटि ब्रह्मांड जननी दिव्यविग्रहा ॥ 124॥
क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य पददायिनी ।
त्रिपुरा त्रिजगद्वंद्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ॥ 125॥
त्र्यक्षरी दिव्य गंधाढ्या सिंदूर तिलकांचिता ।
उमा शैलेंद्रतनया गौरी गंधर्व सेविता ॥ 126॥
विश्वगर्भा स्वर्णगर्भाऽवरदा वागधीश्वरी ।
ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥ 127॥
सर्ववेदांत संवेद्या सत्यानंद स्वरूपिणी ।
लोपामुद्रार्चिता लीला क्लृप्त ब्रह्मांड मंडला ॥ 128॥
अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।
योगिनी योगदा योग्या योगानंदा युगंधरा ॥ 129॥
इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति स्वरूपिणी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप धारिणी ॥ 130॥
अष्टमूर्तिरजाजैत्री लोकयात्रा विधायिनी ।
एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥ 131॥
अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य स्वरूपिणी ।
बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानंदा बलिप्रिया ॥ 132॥
भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव विवर्जिता ।
सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः ॥ 133॥
राज राजेश्वरी राज्य दायिनी राज्य वल्लभा ।
राजत्कृपा राजपीठ निवेशित निजाश्रिता ॥ 134॥
राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरंग बलेश्वरी ।
साम्राज्य दायिनी सत्यसंधा सागरमेखला ॥ 135॥

दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक वशंकरी ।
सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानंद रूपिणी ॥ 136॥
देश कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी ।
सरस्वती शास्त्रमयी गुहांबा गुह्यरूपिणी ॥ 137॥
सर्वोपाधि विनिर्मुक्ता सदाशिव पतिव्रता ।
संप्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमंडल रूपिणी ॥ 138॥
कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही ।
गणांबा गुह्यकाराध्या कोमलांगी गुरुप्रिया ॥ 139॥
स्वतंत्रा सर्वतंत्रेशी दक्षिणामूर्ति रूपिणी ।
सनकादि समाराध्या शिवज्ञान प्रदायिनी ॥ 140॥
चित्कलाऽऽनंद कलिका प्रेमरूपा प्रियंकरी ।
नामपारायण प्रीता नंदिविद्या नटेश्वरी ॥ 141॥
मिथ्या जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।
लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रंभादिवंदिता ॥ 142॥
भवदाव सुधावृष्टिः पापारण्य दवानला ।
दौर्भाग्य तूलवातूला जराध्वांत रविप्रभा ॥ 143॥
भाग्याब्धि चंद्रिका भक्त चित्तकेकि घनाघना ।
रोगपर्वत दंभोलिर् मृत्युदारु कुठारिका ॥ 144॥
महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।
अपर्णा चंडिका चंडमुंडासुर निषूदिनी ॥ 145॥
क्षराक्षरात्मिका सर्व लोकेशी विश्वधारिणी ।
त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यंबका त्रिगुणात्मिका ॥ 146॥
स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प निभाकृतिः ।
ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥ 147॥
दुराराध्या दुराधर्षा पाटली कुसुम प्रिया ।
महती मेरुनिलया मंदार कुसुम प्रिया ॥ 148॥
वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी ।

प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ॥ 149॥
मार्तांड भैरवाराध्या मंत्रिणीन्यस्त राज्यधूः ।
त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ॥ 150॥
सत्य ज्ञानानंद रूपा सामरस्य परायणा ।
कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ॥ 151॥
कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः ।
पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥ 152॥
परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा ।
पाशहस्ता पाशहंत्री परमंत्र विभेदिनी ॥ 153॥
मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस हंसिका ।
सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वांतर्यामिनी सती ॥ 154॥
ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता ।
प्रसवित्री प्रचंडाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥ 155॥
प्राणेश्वरी प्राणदात्री पंचाशत्पीठ रूपिणी ।
विशृंखला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ॥ 156॥
मुकुंदा मुक्तिनिलया मूलविग्रह रूपिणी ।
भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र प्रवर्तिनी ॥ 157॥
छंदःसारा शास्त्रसारा मंत्रसारा तलोदरी ।
उदारकीर्तिर् उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥ 158॥
जन्ममृत्यु जरातप्त जनविश्रांति दायिनी ।
सर्वोपनिष दुद् घुष्टा शांत्यतीत कलात्मिका ॥ 159॥
गंभीरा गगनांतस्था गर्विता गानलोलुपा ।
कल्पना रहिता काष्ठाऽकांता कांतार्ध विग्रहा ॥ 160॥
कार्यकारण निर्मुक्ता कामकेलि तरंगिता ।
कनत्कनकता टंका लीला विग्रह धारिणी ॥ 161॥
अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र प्रसादिनी ।
अंतर्मुख समाराध्या बहिर्मुख सुदुर्लभा ॥ 162॥

त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।
निरामया निरालंबा स्वात्मारामा सुधास्रुतिः ॥ 163॥
संसारपंक निर्मग्न समुद्धरण पंडिता ।
यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान स्वरूपिणी ॥ 164॥
धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य विवर्धिनी ।
विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण कारिणी ॥ 165॥
विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।
अयोनिर् योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ॥ 166॥
वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।
विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैंदवासना ॥ 167॥
तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ स्वरूपिणी ।
सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव कुटुंबिनी ॥ 168॥
सव्यापसव्य मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी ।
स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥ 169॥
चैतन्यार्घ्य समाराध्या चैतन्य कुसुमप्रिया ।
सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य पाटला ॥ 170॥
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दरस्मेर मुखांबुजा ।
कौलिनी केवलाऽनर्घ्य कैवल्य पददायिनी ॥ 171॥
स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति संस्तुत वैभवा ।
मनस्विनी मानवती महेशी मंगलाकृतिः ॥ 172॥
विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।
प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥ 173॥
व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी ।
पंचयज्ञ प्रिया पंच प्रेत मंचाधिशायिनी ॥ 174॥
पंचमी पंचभूतेशी पंच संख्योपचारिणी ।
शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शंभुमोहिनी ॥ 175॥
धराधरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।

लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥ 176॥
बंधूक कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी ।
सुमंगली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥ 177॥
सुवासिन्यर्चन प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा ।
बिंदु तर्पण संतुष्टा पूर्वजा त्रिपुरांबिका ॥ 178॥
दशमुद्रा समाराध्या त्रिपुराश्री वशंकरी ।
ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय स्वरूपिणी ॥ 179॥
योनिमुद्रा त्रिखंडेशी त्रिगुणांबा त्रिकोणगा ।
अनघाऽद्भुत चारित्रा वांछितार्थ प्रदायिनी ॥ 180॥
अभ्यासातिशय ज्ञाता षडध्वातीत रूपिणी ।
अव्याज करुणा मूर्तिर् अज्ञान ध्वांत दीपिका ॥ 181॥
आबाल गोप विदिता सर्वानुल्लंघ्य शासना ।
श्रीचक्रराज निलया श्रीमत् त्रिपुरसुंदरी ॥ 182॥
श्रीशिवा शिव शक्त्यैक्य रूपिणी ललितांबिका ।
एवं श्रीललिता देव्या नाम्नां साहस्रकं जगुः ॥

॥ इति श्रीब्रह्मांडपुराणे उत्तरखंडे हयग्रीवागस्त्यसंवादे श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं संपूर्णं ॥